

पाठ 8 प्रेमचंद (बड़े भाई साहब)

प्रेमचंद: जीवन परिचय

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के विशाल आकाश में यदि किसी लेखक को यथार्थवाद का प्रणेता कहा जाए, तो वह नाम निस्संदेह मुंशी प्रेमचंद का होगा। उन्होंने साहित्य को समाज के करीब लाकर उसे आमजन की पीड़ा, संघर्ष और भावनाओं का दर्पण बना दिया। उनका साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज सुधार का प्रभावी औजार था। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में गांवों की गरीबी, किसानों की वेदना, स्त्रियों की पीड़ा, सामाजिक अन्याय और नैतिक मूल्यों की टूटन को पूरी सच्चाई से अभिव्यक्त किया। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी (तत्कालीन बनारस) के पास लमही गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनके पिता अजायब राय डाक विभाग में एक साधारण कर्मचारी थे, जबकि माता आनंदी देवी एक धार्मिक और सरल स्वभाव की महिला थीं। जब प्रेमचंद मात्र 8 वर्ष के थे, तब उनकी माता का निधन हो गया और कुछ वर्षों बाद पिता भी चल बसे।

इस दुःखद बचपन ने उन्हें बहुत जल्दी जिम्मेदारियों से परिचित करा दिया। आर्थिक तंगी के कारण उन्हें किशोरावस्था में ही नौकरी करनी पड़ी। अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए उन्होंने स्वाध्याय का सहारा लिया और कड़ी मेहनत से इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में उन्होंने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की।

साहित्यिक जीवन की शुरुआत

प्रेमचंद ने अपने लेखन की शुरुआत उर्दू भाषा से की और 'नवाब राय' के नाम से लिखना आरंभ किया। उनकी पहली कृति 'सोज-ए-वतन' (1908) देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कहानियों का संग्रह था। ब्रिटिश सरकार ने इसे राष्ट्रविरोधी मानकर जब्त कर लिया और उन्हें चेतावनी दी गई। इसके बाद उन्होंने हिंदी को अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और 'प्रेमचंद' नाम से लेखन करने लगे।

यह नाम उन्हें मुंशी दयानारायण निगम ने दिया था, जो उनके साहित्यिक पथप्रदर्शक भी माने जाते हैं। हिंदी में लिखना उनके लिए आत्मिक तृप्ति का विषय बन गया।

रोजगार और जीवन संघर्ष

प्रेमचंद ने अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के कार्य किए। वे कभी स्कूल शिक्षक बने, तो कभी स्कूल इंस्पेक्टर। आर्थिक कठिनाइयों के चलते उन्होंने अपने परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए कई बार अलग-अलग नौकरियों का सहारा लिया।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

एक समय वे बंबई (अब मुंबई) की फिल्म नगरी से भी जुड़े, जहाँ उन्होंने पटकथा लेखन का प्रयास किया, लेकिन वह जीवनशैली उन्हें पसंद नहीं आई और वे साहित्य के सरल और सच्चे मार्ग पर लौट आए। इस दौरान उनकी कुछ कृतियों पर फिल्में भी बनीं, जो आज तक याद की जाती हैं।

पत्रकारिता और संपादन कार्य

प्रेमचंद का पत्रकारिता में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने 'हंस', 'जागरण' और 'माधुरी' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। इन पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने सामाजिक मुद्दों, साहित्यिक आलोचनाओं और वैचारिक विमर्श को जन-जन तक पहुँचाया। उनकी पत्रकारिता में भी वही यथार्थवाद और संवेदना झलकती है जो उनके साहित्य में दिखती है।

साहित्यिक रचनाएँ और विविधता

प्रेमचंद की साहित्यिक यात्रा बेहद समृद्ध रही। उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबंध, नाटक, आलोचना, अनुवाद और संपादन जैसे कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया। उनका साहित्य सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ा हुआ है।

1. प्रमुख उपन्यास:

1.1 गोदान (1936):

यह प्रेमचंद का अंतिम और सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इसमें भारतीय किसान की पीड़ा, सामंती व्यवस्था, पूंजीवाद और प्रशासनिक शोषण का यथार्थ चित्रण किया गया है। होरी नामक किसान की त्रासदी पाठकों को झकझोर देती है।

1.2 गबन (1931):

मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं और नैतिक पतन को दर्शाने वाला यह उपन्यास, नैतिकता और लालच के द्वंद को उजागर करता है।

1.3 सेवासदन (1918):

यह उपन्यास वेश्यावृत्ति, सामाजिक बंधनों और नारी अस्मिता पर आधारित है। मुख्य पात्र सुशीला का संघर्ष और परिवर्तन पाठकों के लिए प्रेरणादायक है।

1.4 निर्मला (1926):

बाल विवाह और दहेज प्रथा जैसे सामाजिक कुरीतियों पर आधारित यह उपन्यास अत्यंत मार्मिक है।

1.5 रंगभूमि (1925):

इस उपन्यास में अंधे भिखारी सूरदास के माध्यम से सामाजिक अंधविश्वासों और पूंजीवादी शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई है।

1.6 कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, प्रतिज्ञा और मंगलसूत्र (अपूर्ण):

इन उपन्यासों में भी प्रेमचंद ने सामाजिक और नैतिक प्रश्नों को उठाया है, जिनमें देशभक्ति, आदर्शवाद और मानवीय संवेदनाएँ प्रमुख हैं।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

2. प्रसिद्ध कहानियाँ:

2.1 कफन:

यह कहानी गरीबी की अमानवीयता और मानवीय संवेदनहीनता का अद्वितीय चित्रण है।

2.2 ईदगाह:

बच्चों की भावनाओं और बाल मनोविज्ञान का यह मार्मिक उदाहरण है। हामिद का किरदार आज भी लोगों की स्मृति में जीवित है।

2.3 पंच परमेश्वर:

न्याय और नैतिकता का अनुपम उदाहरण, जहाँ मित्रता और सच्चाई में टकराव होता है।

2.4 बड़े भाई साहब:

यह कहानी शिक्षा और अनुशासन के संबंध को व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत करती है।

2.5 ठाकुर का कुआँ, दो बैलों की कथा, सद्रति, पूस की रात, नमक का दरोगा, और तावान:

इन सभी कहानियों में प्रेमचंद ने सामाजिक विसंगतियों, जातिगत भेदभाव, ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों और मानवीय संवेदनाओं का बेहतरीन चित्रण किया है।

भाषा-शैली की विशेषताएँ

प्रेमचंद की भाषा बेहद सरल, सहज और संवादप्रधान होती थी। वे जनसामान्य की भाषा में लिखते थे जिससे पाठक सीधे जुड़ पाते थे।

- यथार्थवाद: पात्रों और घटनाओं का सजीव चित्रण।
- मानवीय संवेदनाएँ: उनके पात्र दुख, पीड़ा, प्रेम, आशा और निराशा जैसे भावों से भरपूर होते हैं।
- संवादात्मक शैली: संवादों के माध्यम से वे चरित्र को जीवंत बना देते हैं।
- समाज से जुड़ाव: उनका साहित्य समाज के हर वर्ग को स्पर्श करता है।

सामाजिक और राष्ट्रीय योगदान

प्रेमचंद न केवल एक साहित्यकार थे, बल्कि एक समाज सुधारक और राष्ट्रप्रेमी भी थे। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद, बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री-शोषण, और अंग्रेजी हुकूमत के अन्याय के खिलाफ अपनी लेखनी से संघर्ष किया।

उनकी कई रचनाएँ जैसे 'सोज-ए-वतन' ब्रिटिश सरकार के कोप का कारण बनीं। उन्होंने राष्ट्रवाद को साहित्य का हिस्सा बनाया और साहित्य को जन-जागरण का माध्यम बनाया।

प्रेमचंद और हिंदी साहित्य में योगदान

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रेमचंद को हिंदी में:

1. कथा सम्राट (Katha Samrat) की उपाधि:

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' की उपाधि उनके जीवनकाल में ही दी गई थी। यह उपाधि उन्हें इसलिए मिली क्योंकि उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य को एक नई दिशा दी और इसे यथार्थवाद से जोड़ा। उनके द्वारा चित्रित आम आदमी की पीड़ा, सामाजिक अन्याय और नैतिक द्वंद ने पाठकों के दिलों को छू लिया।

2. उपन्यास सम्राट (Upanyas Samrat):

प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' भी कहा गया, क्योंकि उन्होंने हिंदी उपन्यास लेखन को शिल्प, शैली और विषयवस्तु के स्तर पर उत्कृष्टता प्रदान की। 'गोदान', 'निर्मला', 'गबन' जैसे उपन्यासों में उन्होंने ग्रामीण भारत, स्त्री जीवन और सामाजिक विषमताओं को जिस गहराई से उकेरा, वह उस समय की किसी अन्य कृति में दुर्लभ था।

3. हिंदी साहित्य सम्मेलन का सम्मान:

हिंदी साहित्य सम्मेलन जैसे प्रतिष्ठित मंचों पर भी प्रेमचंद को सम्मानित किया गया। उन्हें वहां वक्ता के रूप में बुलाया गया, और उनके विचारों को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा गया।

4. जनसामान्य का असीम स्नेह और सम्मान:

प्रेमचंद को सबसे बड़ा सम्मान उस आम जनता से मिला जिसके लिए और जिसके बारे में उन्होंने लिखा। किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, निम्न वर्ग — जिनकी आवाज़ साहित्य में पहले कभी सुनाई नहीं दी थी — उन्हें प्रेमचंद की रचनाओं में स्थान मिला। इसीलिए वे 'जनकवि' और 'जनसाहित्यकार' के रूप में माने गए।

5. साहित्यिक गुरुओं और समकालीन लेखकों का सम्मान:

उनके समकालीन साहित्यकारों और आलोचकों ने भी उनके कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वानों ने प्रेमचंद को यथार्थवादी साहित्य की नई धारा का प्रवर्तक माना।

उनकी कहानियाँ और उपन्यास केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखे गए थे, बल्कि उनमें समाज को जाग्रत करने की शक्ति थी। उन्होंने साहित्य को 'जनता की आवाज़' बनाया।

मृत्यु और विरासत

8 अक्टूबर, 1936 को प्रेमचंद का निधन हो गया। वे आर्थिक रूप से कभी समृद्ध नहीं हुए, लेकिन साहित्यिक समृद्धि में उन्होंने जो योगदान दिया, वह आज भी अतुलनीय है।

उनकी सभी कहानियाँ 'मानसरोवर' नामक संग्रह में आठ खंडों में संकलित हैं। उनका साहित्य न केवल भारत में, बल्कि विश्वभर में पढ़ा और सराहा जाता है।

निष्कर्ष

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

मुंशी प्रेमचंद का साहित्य हमें सिखाता है कि साहित्य केवल कल्पना नहीं, समाज का प्रतिबिंब होना चाहिए। उन्होंने लेखनी को समाज सुधार का माध्यम बनाया। उनकी कहानियों में नायकों के स्थान पर समाज के उपेक्षित वर्गों को स्थान मिला। उन्होंने सच्चाई, संवेदना, नैतिकता और सामाजिक न्याय की बातें कीं।

प्रेमचंद का साहित्य हर युग में प्रासंगिक रहेगा क्योंकि उसकी जड़ें मानवीय संवेदनाओं में गहराई से धंसी हैं। उन्होंने जो विरासत छोड़ी है, वह आने वाली पीढ़ियों को भी मानवता, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व का पाठ पढ़ाती रहेगी।

प्रश्न – अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

उत्तर 1: कथा नायक को खेलकूद और यात्रा करने में विशेष रुचि थी।

प्रश्न 2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

उत्तर 2: बड़े भाई हमेशा छोटे भाई से पहले यह सवाल पूछते थे, "तुम कहाँ थे?"

प्रश्न 3. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर 3: दूसरी बार परीक्षा में सफलता मिलने पर छोटे भाई का स्वच्छंद व्यवहार बढ़ गया। उसने बड़े भाई की सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाना शुरू कर दिया।

प्रश्न 4. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे?

उत्तर 4: बड़े भाई साहब छोटे भाई से पाँच वर्ष बड़े थे और वे नौवीं कक्षा में पढ़ते थे।

प्रश्न 5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर 5: वे दिमाग को आराम देने के लिए अपनी किताबों और कॉपी के हाशिये पर पंछियों, कुत्तों और बिल्लियों की चित्रकारी किया करते थे।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

उत्तर 1:

(i) टाइम-टेबल का पालन करने का निर्णय: छोटे भाई ने टाइम-टेबल बनाते समय यह तय किया था कि वह इसका पूरी तरह पालन करेगा।

(ii) मन की चंचलता: लेकिन लेखक अपनी चंचलता के कारण टाइम-टेबल का पालन नहीं कर सका। जब उसने बाहर का मौसम और खेल के माहौल को देखा, तो वह वहां खेल में रम गया।

प्रश्न 2. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर 2:

(i) पहली प्रतिक्रिया - डांट: एक दिन गुल्ली-डंडा खेलने के बाद जब लेखक घर पहुँचा, तो बड़े भाई ने उसे डांटा और कहा कि तुम इस वर्ष पास हुए हो तो अब तुम्हारा दिमाग चढ़ गया है।

(ii) घमंड के बारे में समझाना: बड़े भाई ने कहा कि घमंड किसी का भी अच्छा नहीं होता, और यह तो रावण जैसे महान व्यक्ति का भी विनाश कर चुका था।

प्रश्न 3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

उत्तर 3:

(i) पढ़ाई का दबाव: बड़े भाई साहब को अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता था क्योंकि उन्हें हमेशा पढ़ाई का दबाव महसूस होता था। वे भी अन्य लड़कों की तरह खेलना चाहते थे, लेकिन पढ़ाई की जिम्मेदारी उन्हें अपनी इच्छाएँ दबाने पर मजबूर करती थी।

(ii) छोटे भाई की चिंता: वे अपने छोटे भाई की चिंता करते थे, और इस कारण भी अपनी इच्छाओं को दबाना उनकी मजबूरी बन गई थी।

प्रश्न 4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

उत्तर 4:

(i) सुझाव: बड़े भाई साहब छोटे भाई को खेलकूद में न जाने की सलाह देते थे।

(ii) कारण: वे पढ़ाई को ज्यादा महत्व देते थे। उनके अनुसार, अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए हर समय पढ़ाई करनी चाहिए, क्योंकि इससे ज्ञान भी बढ़ता है।

प्रश्न 5. छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया?

उत्तर 5:

(i) नरम व्यवहार का लाभ उठाना: जब बड़े भाई साहब दूसरी बार फेल होने के बाद नरम हो गए थे, तो लेखक ने उनकी सहनशीलता का गलत फायदा उठाया और पूरे दिन पतंगबाजी करता रहा।

(ii) गलत धारणा: लेखक को यह गलत धारणा हो गई कि वह बिना पढ़े ही पास हो सकता है, क्योंकि उसकी किस्मत बलवान थी।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए-

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रश्न 1. बड़े भाई की डॉट फटकार अगर न मिलती तो क्या छोटा भाई कक्षा में अक्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर 1: छोटे भाई के कक्षा में अक्वल आने में बड़े भाई की डॉट-फटकार का महत्वपूर्ण योगदान था:

1. बड़ा भाई समय-समय पर छोटे भाई को डॉटता था, जिससे वह पढ़ाई करने के लिए मजबूर हो जाता था।
2. अगर बड़ा भाई उसे नहीं डॉटता, तो छोटा भाई हमेशा खेलने में ही व्यस्त रहता, क्योंकि उसे पढ़ाई में रुचि नहीं थी।
3. बड़े भाई के दबाव के कारण उसे पढ़ाई करनी पड़ती थी, और उसकी तेज बुद्धि के चलते, वह थोड़ा पढ़ने पर भी कक्षा में अक्वल आ जाता था।

प्रश्न 2. बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

उत्तर 2: लेखक ने 'बड़े भाई साहब' पाठ में शिक्षा पद्धति पर गहरा व्यंग्य किया है:

1. विषयों का भार: छात्रों पर कई विषयों का बोझ डाला जाता है, जिनमें उनकी रुचि नहीं होती, और उन्हें इन्हें पढ़ने के लिए मजबूर किया जाता है।
2. वास्तविक समझ का अभाव: इस शिक्षा पद्धति में छात्रों को बिना समझे रटना पड़ता है, और उनका मुख्य उद्देश्य सिर्फ परीक्षा पास करना रह जाता है।
3. शिक्षा पद्धति की खामियाँ: बड़े भाई, जो कि तेज दिमाग वाला है, मानसिक दबाव और तनाव के कारण दिन-रात पढ़ाई करने के बावजूद फेल हो जाता है।

प्रश्न 3. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

उत्तर 3: बड़े भाई के अनुसार, जीवन की समझ केवल कक्षाओं में पास होने से नहीं, बल्कि अनुभवों से आती है:

1. बड़े भाई का मानना था कि जीवन के असली पाठ अनुभवों से ही मिलते हैं।
2. वह छोटे भाई को यह बताने की कोशिश करता है कि जीवन के अनुभवों से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं, और इस संदर्भ में वह अम्मा और दादा की मिसाल देते हैं।

प्रश्न 4. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर:

1. बड़े भाई ने छोटे भाई को कई युक्तियों से समझाया, जिससे वह उनके सामने नतमस्तक हो गया और भाई साहब के प्रति श्रद्धा महसूस करने लगा।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

2. बड़े भाई ने तजुर्बे को महत्व देते हुए माता-पिता और हेडमास्टर की मिसाल दी, यह बताने के लिए कि अनुभव ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है।
3. बड़े भाई ने हेडमास्टर का उदाहरण भी दिया, जो एम.ए. पास होने के बावजूद अपनी बुजुर्ग माँ से घर के कामों में मदद लेते हैं, जिससे छोटे भाई को यह समझ में आया कि अनुभव ही सबसे बड़ा शिक्षक है।

प्रश्न 5. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए ।

उत्तर 5:

1. परिश्रमी: बड़ा भाई अत्यधिक परिश्रमी है, वह दिन-रात पढ़ाई में व्यस्त रहता है और खेलकूद में समय नहीं बिताता।
2. उपदेश कला: वह एक कुशल उपदेशक है, जो अपनी बातें छोटे भाई पर प्रभाव डालने में सफल हो जाता है।
3. अनुभवी: बड़े भाई का अनुभव उसके छोटे भाई से अधिक है, जिससे वह अपने तर्कों और अनुभवों के आधार पर अधिक समझदार और अनुभवी लगता है।

प्रश्न 6. बड़े भाई ने ज़िन्दगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

उत्तर 6:

1. अनुभव को अधिक महत्व: बड़ा भाई अनुभव को ज्यादा महत्व देता है, क्योंकि यह व्यावहारिक ज्ञान होता है, जबकि किताबी ज्ञान केवल रटता है।
2. कारण: अनुभव जीवन के कार्यों पर आधारित होता है, और इसी कारण अधिक पढ़े-लिखे लोग भी व्यावहारिक मदद के लिए अनुभवी लोगों की सहायता लेते हैं।

प्रश्न 7. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

(क) छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है।

उत्तर: लेखक बताते हैं, "मैं उनकी नई युक्ति से नतमस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई।" यह दिखाता है कि छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है।

(ख) भाई साहब को ज़िन्दगी का अच्छा अनुभव है।

उत्तर: बड़ा भाई कहता है, "मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया और ज़िन्दगी का जो तजुर्बा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते।" यह बताता है कि भाई साहब को ज़िन्दगी का अच्छा अनुभव है।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

(ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा हैं।

उत्तर: "भाई साहब लम्बे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े।" इस अंश से यह स्पष्ट होता है कि भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

(घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

उत्तर: लेखक कहते हैं, "आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं, मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ।" इससे यह जाहिर होता है कि भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. "इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास।"

उत्तर 1: आशय - लेखक का कहना है कि इम्तिहान केवल किताबों का ज्ञान रटकर पास किया जा सकता है, लेकिन असली सफलता बुद्धि के विकास और सच्चे ज्ञान में है। यदि बुद्धि का विकास नहीं होता, तो इम्तिहान पास करने का कोई वास्तविक मूल्य नहीं है।

2. "फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बन्धन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल - कूद का तिरस्कार नहीं कर सकता था।"

उत्तर 2: आशय - लेखक यह व्यक्त करता है कि जबकि मृत्यु और विपत्ति अनिवार्य हैं, फिर भी इंसान मोह और माया के बंधनों में बंधा रहता है। यही कारण है कि वह जानता हुआ भी कि खेलकूद से पढाई में विघ्न आता है, फिर भी उसे छोड़ नहीं पाता।

3. "बुनियाद ही पुख्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने।"

उत्तर 3: आशय - जैसे एक मजबूत नींव के बिना मकान पक्का नहीं बन सकता, उसी तरह यदि विद्यार्थी अपनी मेहनत और ज्ञान की नींव मजबूत नहीं करता, तो उसका भविष्य कमजोर हो सकता है। बचपन में ज्ञान प्राप्त करने की महत्ता को समझते हुए यह कहा गया है कि बचपन ही जीवन की बुनियाद है।

4. आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

उत्तर 4: आशय - लेखक पतंग उड़ाने के लिए आकाश की ओर देख रहा है और उसे उस पथिक की तलाश है जो धीरे-धीरे पतन की ओर बढ़ रहा है। यह चित्रण व्यक्ति की आत्मा की यात्रा के रूप में किया गया है, जैसे वह आकाश में घूमते हुए नए अनुभवों और संस्कारों के लिए मार्ग तय कर रही हो। भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए- नसीहत, रोष, आजादी, राजा, ताज्जुब।

उत्तर 1-

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

- नसीहत: उपदेश, सलाह
- रोष: क्रोध, गुस्सा
- आजादी: स्वतंत्रता, मुक्ति
- राजा: सम्राट, शासक
- ताज्जुब: हैरानी, आश्चर्य

प्रश्न 2. प्रेमचंद की भाषा बहुत पैंनी और मुहावरेदार है। इसीलिए इनकी कहानियाँ रोचक और प्रभावपूर्ण होती हैं। इस कहानी में आप देखेंगे कि हर अनुच्छेद में दो-तीन मुहावरों का प्रयोग किया गया है। उदाहरणतः इन वाक्यों को देखिए और ध्यान से पढ़िए-

- मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था।
- भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती ।
- वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता।

निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

सिर पर नंगी तलवार लटकना, आड़े हाथों लेना, अंधे के हाथ बटेर लगना, लोहे के चने चबाना, दाँतों पसीना आना, ऐरा - गैरा नत्थू खैरा ।

उत्तर 2:

1. सिर पर नंगी तलवार लटकना
जब मुझे पता चला कि मुझे अगले सप्ताह परीक्षा देनी है, तो मानो सिर पर नंगी तलवार लटकने लगी। अब तो बस डर ही डर था।
2. आड़े हाथों लेना
वह मुझे हमेशा आड़े हाथों लेता था, चाहे मैंने गलती की हो या न, उसकी बातों से मन ही मन मुझे गुस्सा आ जाता।
3. अंधे के हाथ बटेर लगना
जैसे ही उसे वह बड़ी नौकरी मिल गई, वैसा ही लगा जैसे अंधे के हाथ बटेर लग गई हो। उसकी किस्मत अचानक बदल गई।
4. लोहे के चने चबाना
वह जब किसी को अपनी बातों में फंसाता है, तो समझो किसी के लिए लोहे के चने चबाना हो जाता है। उसकी बुद्धिमानी के सामने सब हलके लगते हैं।
5. दाँतों पसीना आना
उस कठिन परीक्षा के बाद दाँतों पसीना आ गया था। मुझे लगा था कि अब तो मेरा काम तमाम है, लेकिन मैंने मेहनत से उसे पास किया।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

6. ऐरा-गैरा नत्थू खैरा

वह खुद को बड़ा समझता है, जबकि वह ऐरा-गैरा नत्थू खैरा है, जिसे कोई भी गंभीरता से नहीं लेता।

प्रश्न 3. निम्नलिखित तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दों को दिए गए उदाहरणों के आधार पर छाँटकर लिखिए।

तत्सम	तद्भव	देशज	आगत (अंग्रेज़ी एवं उर्दू/अरबी-फ़ारसी)
जन्मसिद्ध	आँख	दाल-भात	पोज़ीशन, फजीहत

तालीम, जल्दबाजी, पुख्ता, हाशिया, चेष्टा, जमात, हर्फ, सूक्तिबाण, जानलेवा, आँखफोड़, घुड़कियाँ, आधिपत्य, पन्ना, मेला तमाशा, मसलन, स्पेशल, स्कीम, फटकार, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण, भाई साहब, अवहेलना, टाइम-टेबिल ।

उत्तर 3- यहाँ दिए गए शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज, और आगत श्रेणियों में विभाजित करके एक तालिका बनाई गई है

तत्सम	तद्भव	देशज	आगत (अंग्रेज़ी/उर्दू-फ़ारसी)
प्रातःकाल	आँख	दाल-भात	पोज़ीशन (Position)
चेष्टा	पन्ना	मेला तमाशा	फजीहत (Fazihat)
आधिपत्य	अवहेलना	घुड़कियाँ	स्पेशल (Special)
विद्वान	निपुण	भाई साहब	स्कीम (Scheme)
सूक्तिबाण		फटकार	हर्फ, मसलन, जल्दबाजी, जमात
		जानलेवा	टाइम-टेबिल (Time-table)
		आँखफोड़	तालीम, पुख्ता, हाशिया

- तत्सम: वे शब्द जो संस्कृत से सीधे आए हैं।
- तद्भव: वे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न होकर सामान्य हिंदी में बदले गए हैं।
- देशज: वे शब्द जो हिंदी के क्षेत्रीय बोलचाल में मूल रूप से प्रयोग होते हैं।
- आगत: वे शब्द जो अन्य भाषाओं (जैसे अंग्रेज़ी, उर्दू, फ़ारसी) से हिंदी में आए हैं।

प्रश्न 4. क्रियाएँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं- सकर्मक और अकर्मक।

सकर्मक क्रिया- वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा रहती है. उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं;

जैसे- शीला ने सेब खाया।

मोहन पानी पी रहा है।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

अकर्मक क्रिया- वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा नहीं होती. उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं;

जैसे- शीला हँसती है।

बच्चा रो रहा है।

नीचे दिए वाक्यों में कौन-सी क्रिया है सकर्मक या अकर्मक? लिखिए-

यहाँ दिए गए वाक्यों में क्रियाओं की पहचान इस प्रकार की जा सकती है:

(क) उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया।

क्रिया: पकड़ लिया - यह सकर्मक क्रिया है, क्योंकि इसमें "हाथ" (कर्म) की आवश्यकता है।

(ख) फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा।

क्रिया: कटने लगा - यह अकर्मक क्रिया है, क्योंकि इसमें कोई विशिष्ट कर्म नहीं है।

(ग) शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा।

क्रिया: पढ़ा होगा - यह सकर्मक क्रिया है, क्योंकि "हाल" (कर्म) का उल्लेख है।

(घ) मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।

क्रिया: बहाने लगता - यह अकर्मक क्रिया है, क्योंकि इसमें कर्म का उल्लेख नहीं है, बल्कि "आँसू बहाना" एक स्थिति को व्यक्त करता है।

(ङ) समय की पाबंदी पर एक निबन्ध लिखो।

क्रिया: लिखो - यह सकर्मक क्रिया है, क्योंकि "निबन्ध" (कर्म) का उल्लेख है।

(च) मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

क्रिया: दौड़ रहा था - यह अकर्मक क्रिया है, क्योंकि इसमें कोई विशिष्ट कर्म नहीं है।

प्रश्न 5. 'इक्' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए ।

विचार, इतिहास, संसार, दिन, नीति, प्रयोग, अधिकार

उत्तर 5- 'इक्' प्रत्यय लगाने से निम्नलिखित शब्द बनते हैं:

1. विचार + इक् = वैचारिक
2. इतिहास + इक् = ऐतिहासिक
3. संसार + इक् = सांसारिक
4. दिन + इक् = दैनिक
5. नीति + इक् = नैतिक

6. प्रयोग + इक् = प्रायोगिक
7. अधिकार + इक् = अधिकारिक

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. प्रेमचंद की कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित हैं। इनमें से कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए। कुछ कहानियों का मंचन भी कीजिए।

उत्तर 1- प्रेमचंद की कहानियाँ "मानसरोवर" के आठ भागों में संकलित हैं। ये कहानियाँ भारतीय समाज की गहरी सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक संरचनाओं को उजागर करती हैं। उनमें से कुछ प्रमुख कहानियाँ निम्नलिखित हैं:

1. ईदगाह – यह कहानी एक छोटे से लड़के की है जो अपनी दादी के पास रहने जाता है और ईद के दिन वहाँ से लौटते समय वह अपने सारे पैसे अपनी दादी के लिए एक चिमटा खरीदने में खर्च कर देता है। यह कहानी बच्चों के निर्दोष प्रेम और अपनी जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है।
2. कफन – यह कहानी एक गरीब जोड़े की है, जो अपनी जीवन की कठिनाइयों से जूझते हुए, एक सादा कफन खरीदने के लिए पैसे जुटाने में नाकाम रहते हैं। यह कहानी समाज के गहरे दुख और इंसान की मानसिकता को दिखाती है।
3. पूस की रात – यह कहानी एक गरीब किसान की है, जो सर्दी में रात बिताने के लिए संघर्ष करता है। यह कहानी किसानों की कठिनाइयों और उनकी मेहनत की सच्चाई को उजागर करती है।
4. सपनों का सौदागर – इस कहानी में प्रेमचंद ने व्यक्ति के मानसिक द्वंद्व और जीवन के आदर्शों को प्रदर्शित किया है।

आप कक्षा में इन कहानियों का मंचन कर सकते हैं। इसके लिए आप पात्रों के संवादों का अभ्यास करके एक सजीव प्रस्तुति दे सकते हैं, जिसमें पात्रों के भावनात्मक उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए अभिनय किया जा सकता है। मंचन के दौरान आप कहानी के सामाजिक संदर्भों और मूल संदेश को भी छात्रों के सामने रख सकते हैं।

प्रश्न 2. शिक्षा रटंत विद्या नहीं है - इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर 2- "शिक्षा रटंत विद्या नहीं है" इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित करते समय आप निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं:

1. शिक्षा का उद्देश्य: शिक्षा केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य सोचने की क्षमता, समस्या सुलझाने की कला और जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

करना है। रटंत विद्या में छात्रों को केवल किताबों में लिखी बातें याद करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जबकि सही शिक्षा में सोचने और समझने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जाता है।

2. रटंत विद्या की सीमाएँ: रटंत विद्या में छात्रों को केवल तथ्यों और सूचनाओं को याद करने के लिए कहा जाता है, बिना किसी गहरे अर्थ और समझ के। इससे छात्रों की सोचने की क्षमता में कोई विकास नहीं होता और वे केवल परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करते हैं, न कि जीवन में।
3. समझ आधारित शिक्षा: शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ज्ञान को समझने, उसका विश्लेषण करने और उसे जीवन में लागू करने का होता है। समझ आधारित शिक्षा में, छात्र ज्ञान को अधिक सजीव और सार्थक तरीके से ग्रहण करते हैं, जो उन्हें भविष्य में सही निर्णय लेने में मदद करता है।
4. नवाचार और रचनात्मकता: रटंत विद्या छात्रों के रचनात्मक सोच और नवाचार के कौशल को दबा देती है। जबकि शिक्षा का उद्देश्य है कि छात्र खुद सवाल करें, समाधान खोजें, और नये विचार प्रस्तुत करें। इसके लिए सही शिक्षा की आवश्यकता होती है, जो उन्हें मानसिक रूप से सशक्त बनाए।
5. उदाहरण और विचार विमर्श: आप कक्षा में कुछ उदाहरण दे सकते हैं जैसे कि किसी छात्र को यदि केवल रटंत विद्या के माध्यम से गणित के फार्मूले याद कराए जाएं, तो वह कभी भी उन फार्मूलों का उपयोग वास्तविक जीवन में सही तरीके से नहीं कर पाएगा। दूसरी ओर, यदि वही छात्र इन फार्मूलों को समझकर और उनका उद्देश्य जानकर उन्हें सीखता है, तो वह जीवन में उनका अधिक प्रभावी उपयोग कर सकेगा।
6. निष्कर्ष: शिक्षा केवल रटंत विद्या नहीं है। यह समझ, सोच, और विकास की प्रक्रिया है। एक छात्र को केवल किताबों के तथ्यों को याद करने के बजाय उन्हें जीवन में काम आने योग्य ज्ञान और कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

इस परिचर्चा के माध्यम से छात्र यह समझ सकते हैं कि शिक्षा की वास्तविक शक्ति रटंत विद्या में नहीं, बल्कि समझ और सृजनात्मकता में निहित है।

प्रश्न 3. क्या पढ़ाई और खेल-कूद साथ-साथ चल सकते हैं-कक्षा में इस पर वाद-विवाद कार्यक्रम आयोजित कीजिए ।

उत्तर 3- विरोध (पढ़ाई और खेल साथ नहीं चल सकते):

1. समय की कमी: जब विद्यार्थी को पढ़ाई और खेल दोनों में समय देना होता है, तो समय की कमी हो सकती है। इससे उनकी पढ़ाई पर असर पड़ सकता है, खासकर उन विद्यार्थियों के लिए जिनके पास ज्यादा समय नहीं होता।
2. ध्यान की कमी: पढ़ाई और खेल के बीच संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो सकता है। खेल के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान पढ़ाई से हट सकता है, और पढ़ाई के दौरान खेल की यादें उनके मन में विचलन पैदा कर सकती हैं।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

3. थकावट: खेल के दौरान शरीर थका हुआ महसूस कर सकता है, जिससे विद्यार्थी की ऊर्जा पढ़ाई में पूरी तरह से नहीं लग पाती। इससे पढ़ाई की गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है।
4. पारिवारिक दबाव: कई परिवारों में पढ़ाई को अधिक प्राथमिकता दी जाती है, और खेल को समय की बर्बादी माना जाता है। इससे विद्यार्थियों पर मानसिक दबाव बढ़ सकता है।

सहमत (पढ़ाई और खेल साथ चल सकते हैं):

1. शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य: खेल बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारते हैं, जिससे वे मानसिक रूप से भी ताजगी महसूस करते हैं। इससे पढ़ाई में भी बेहतर ध्यान और एकाग्रता बनी रहती है।
2. समय का प्रबंधन: यदि विद्यार्थियों को समय का सही प्रबंधन करना सिखाया जाए, तो वे पढ़ाई और खेल दोनों को संतुलित तरीके से कर सकते हैं। यह उनके आत्म-प्रबंधन कौशल को भी बेहतर बनाता है।
3. टीम वर्क और नेतृत्व कौशल: खेल में भाग लेने से विद्यार्थियों में टीम वर्क और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है, जो भविष्य में उनके शैक्षिक और व्यक्तिगत जीवन में भी सहायक हो सकता है।
4. मनोरंजन और तनाव में कमी: पढ़ाई के दबाव को कम करने के लिए खेल एक अच्छा तरीका हो सकता है। खेल के दौरान शरीर में एंडोर्फिन्स का स्तर बढ़ता है, जो मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है।

निष्कर्ष: पढ़ाई और खेल दोनों का संतुलन बनाए रखना संभव है, यदि विद्यार्थी समय का सही प्रबंधन करें। यह उनकी मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए फायदेमंद हो सकता है, बशर्ते खेल के समय और पढ़ाई के समय में सही संतुलन स्थापित किया जाए।

प्रश्न 4. क्या परीक्षा पास कर लेना ही योग्यता का आधार है? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

उत्तर 4- यह प्रश्न समाज और शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण विषय है। परीक्षा पास करना निश्चित रूप से एक व्यक्ति की योग्यता का एक मानक हो सकता है, लेकिन यह केवल योग्यता का एक हिस्सा ही होता है।

परीक्षा का उद्देश्य

परीक्षा एक ऐसे उपकरण के रूप में कार्य करती है, जिससे यह मापने की कोशिश की जाती है कि एक छात्र ने कितना ज्ञान प्राप्त किया है और उसने अध्ययन किए गए विषयों को कितना समझा है। हालांकि, यह हर व्यक्ति की पूरी क्षमता और योग्यता को मापने का सही तरीका नहीं हो सकता। कई बार, परीक्षा का परिणाम व्यक्ति की मानसिक स्थिति, अध्ययन की विधि, या परीक्षा के दौरान की स्थितियों पर भी निर्भर करता है।

योग्यता के अन्य मानक

योग्यता सिर्फ अकादमिक ज्ञान से नहीं, बल्कि व्यक्ति की अन्य क्षमताओं से भी जुड़ी होती है जैसे:

- समस्या सुलझाने की क्षमता

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

- सृजनात्मकता
- संचार कौशल
- नेतृत्व गुण
- समय प्रबंधन
- सामाजिक और भावनात्मक समझ

इन क्षमताओं का मूल्यांकन परीक्षा के माध्यम से नहीं किया जा सकता है। एक व्यक्ति जो परीक्षा में अच्छा नहीं कर पाता, वह किसी और क्षेत्र में उत्कृष्ट हो सकता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति गणित में कमजोर हो सकता है लेकिन उसे कला, संगीत या खेल में शानदार योग्यता हो सकती है।

समाज में व्यावहारिक ज्ञान का महत्व

आजकल की तेजी से बदलती दुनिया में, व्यावहारिक और तकनीकी ज्ञान की अहमियत बढ़ी है। ऐसे में यह जरूरी है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा परिणामों तक सीमित न हो, बल्कि वास्तविक जीवन में काम आने वाली स्किल्स को भी महत्वपूर्ण माना जाए।

निष्कर्ष

इसलिए यह कहना कि केवल परीक्षा पास कर लेना ही योग्यता का आधार है, यह एक संकुचित दृष्टिकोण होगा। योग्यता का आकलन केवल अकादमिक परिणामों पर नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के समग्र विकास, उसकी सोच, और व्यवहारिक क्षमताओं पर भी निर्भर करना चाहिए।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. कहानी में जिंदगी से प्राप्त अनुभवों को किताबी ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण बताया गया है। अपने माता-पिता, बड़े भाई-बहनों या अन्य बुजुर्ग / बड़े सदस्यों से उनके जीवन के बारे में बातचीत कीजिए और पता लगाइए कि बेहतर ढंग से जिंदगी जीने के लिए क्या काम आया - समझदारी / पुराने अनुभव या किताबी पढ़ाई ?

उत्तर 1 - कहानी में यह बताया गया है कि जिंदगी से प्राप्त अनुभवों को किताबी ज्ञान से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है। अनुभवों से ही व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए समझदारी और सही निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करता है, जो कि सिर्फ किताबी ज्ञान से नहीं आ सकता।

अब, यदि हम माता-पिता, बड़े भाई-बहनों या अन्य बुजुर्गों से बात करें तो हमें यह सुनने को मिलेगा कि जीवन के कई पहलुओं को समझने में उनकी उम्र और अनुभव का बहुत बड़ा हाथ रहा है। वे हमें यह बताते हैं कि किताबी पढ़ाई के साथ-साथ जीवन के विभिन्न अनुभव भी हमें सिखाते हैं कि किसे, कब और कैसे करना है।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

उदाहरण के लिए, मेरे माता-पिता का कहना है कि जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए जो अनुभव होते हैं, वह किताबों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। वे कहते हैं कि किताबी ज्ञान केवल एक दिशा दिखाता है, लेकिन अनुभव हमें उन रास्तों पर चलने का साहस और क्षमता देता है।

अर्थात्, बेहतर ढंग से जिंदगी जीने के लिए अनुभव और समझदारी ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये हमें जीवन के हर पहलू को सही दृष्टिकोण से देखने में मदद करते हैं।

प्रश्न 2. आपकी छोटी बहिन / छोटा भाई छात्रावास में रहती / रहता है। उसकी पढाई-लिखाई के संबंध में उसे एक पत्र लिखिए ।

उत्तर 2-

प्रिय बहन/भैया,

सस्नेह नमस्कार!

आशा है कि तुम स्वस्थ और खुशहाल रहोगी। तुम्हारे छात्रावास में रहने के बाद से तुम्हारी पढाई के बारे में बहुत सोचा है। अब यह पत्र तुम्हें तुम्हारी पढाई के संबंध में कुछ सुझाव देने के लिए लिख रहा हूँ/लिख रही हूँ।

मैं जानता हूँ कि छात्रावास में रहते हुए पढाई की नियमितता बनाए रखना थोड़ा मुश्किल हो सकता है, लेकिन यदि तुम सही तरीके से अपनी दिनचर्या बनाओ तो बहुत आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकती हो/सकते हो। सबसे पहले, यह सुनिश्चित करो कि तुम्हारा समय अच्छी तरह से व्यवस्थित हो। सुबह उठते ही थोड़ा समय खुद के लिए निकालो, ताकि दिन की शुरुआत ताजगी के साथ हो। फिर, अपनी कक्षाओं के नोट्स समय-समय पर देखो और उन्हें नियमित रूप से पढाई में शामिल करो।

इसके अलावा, अगर तुम्हें किसी विषय में परेशानी हो तो अपने दोस्तों से या शिक्षक से मदद जरूर लेना। छात्रावास में ही तुम्हारे पास अच्छे मित्र होते हैं, जो तुम्हारी मदद कर सकते हैं। साथ ही, एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम हमेशा खुद को प्रोत्साहित रखो। कभी भी यह मत सोचो कि कोई विषय मुश्किल है, क्योंकि तुम्हारे पास सभी साधन हैं, बस जरूरत है तो थोड़ी मेहनत और लगन की।

तुम्हारी पढाई के साथ-साथ तुम्हें अपनी सेहत का भी ख्याल रखना जरूरी है। पौष्टिक आहार और पर्याप्त नींद तुम्हारे मानसिक और शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।

आशा है कि तुम इस पत्र को ध्यान से पढ़ोगी और मेरी बातें समझ पाओगी। तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ/करती हूँ।

ख्याल रखना,

[तुम्हारा नाम]

पाठ 8: प्रेमचंद (बड़े भाई साहब) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर, सारांश

पाठ 8: बड़े भाई साहब (प्रेमचंद)का सारांश

यह कहानी लेखक प्रेमचंद के बड़े भाई की जीवन कहानी और उनके व्यक्तित्व पर आधारित है। बड़े भाई साहब का स्वभाव बहुत कठोर और अनुशासित था। वे अपने छोटे भाई की पढ़ाई और संस्कारों का विशेष ध्यान रखते थे। वे हमेशा मेहनत करने और सही रास्ते पर चलने की सीख देते थे। बड़े भाई साहब के कठोर स्वभाव के बावजूद, उनका प्रेम और ममता भी छुपा हुआ था। उनकी इस कड़क शिक्षा ने लेखक को अनुशासन, मेहनत और ईमानदारी का महत्व समझाया। कहानी में बड़े भाई साहब का जीवन चरित्र एक आदर्श बड़े भाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अपने परिवार के लिए समर्पित, जिम्मेदार और प्रेरणादायक था। इस प्रकार, यह कहानी भाईचारे, अनुशासन और परिवार के महत्व को दर्शाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: प्रेमचंद को ग्रामीण जीवन का सशक्त चित्रणकर्ता क्यों माना जाता है?

उत्तर: प्रेमचंद को ग्रामीण जीवन का सशक्त चित्रणकर्ता इसलिए माना जाता है क्योंकि उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में किसानों, मजदूरों और आम लोगों की पीड़ा, संघर्ष और सामाजिक स्थितियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। प्रेमचंद की रचनाओं में समाज की असल तस्वीर झलकती है। उनका साहित्य दया, न्याय और करुणा की भावना से ओतप्रोत है, जिससे पाठक उनसे जुड़ाव महसूस करते हैं। प्रेमचंद का साहित्य आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

प्रश्न 2: प्रेमचंद की कहानियों में नैतिक शिक्षा का क्या स्थान है?

उत्तर: प्रेमचंद की कहानियों में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्व है। उनकी रचनाएं केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों और जीवन के आदर्शों का मार्गदर्शन करती हैं। प्रेमचंद ने अपने पात्रों के माध्यम से ईमानदारी, सत्य, करुणा, सहानुभूति जैसे गुणों का संदेश दिया। 'ईदगाह' और 'पंच परमेश्वर' जैसी कहानियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि प्रेमचंद अपने साहित्य से पाठकों को नैतिकता की ओर प्रेरित करते हैं।

प्रश्न 3: प्रेमचंद की भाषा शैली पाठकों को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर: प्रेमचंद की भाषा शैली सरल, सहज और आम जनता की बोली से जुड़ी हुई है। उन्होंने खड़ी बोली और उर्दू के समन्वय से ऐसी भाषा विकसित की जो ग्रामीण और शहरी पाठकों दोनों के लिए आकर्षक रही। प्रेमचंद की लेखनी में भावनात्मक गहराई और समाज की सच्चाई झलकती है। उनकी शैली संवाद प्रधान और पात्रों की मानसिकता को उजागर करने वाली है, जो पाठकों को सहजता से प्रभावित करती है।

प्रश्न 4: प्रेमचंद ने अपने साहित्य में महिलाओं की भूमिका को कैसे दर्शाया है?

उत्तर: प्रेमचंद ने महिलाओं की भूमिका को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने नारी की सहनशीलता, आत्मबल और संघर्ष को रचनात्मकता से उकेरा। 'सेवासदन' और 'निर्मला' जैसे उपन्यासों में प्रेमचंद ने स्त्री की सामाजिक

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

स्थिति और अधिकारों की विवेचना की। प्रेमचंद की रचनाएं नारी सशक्तिकरण की दिशा में प्रेरणादायक हैं। उन्होंने महिलाओं को केवल अबला नहीं, बल्कि समाज की रीढ़ के रूप में दिखाया, जिससे उनका साहित्य कालजयी बन गया।

प्रश्न 5: प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थवाद का महत्व क्या है?

उत्तर: प्रेमचंद के साहित्य में यथार्थवाद का विशेष महत्व है। उन्होंने समाज की वास्तविक समस्याओं, गरीबी, शोषण, भेदभाव और संघर्ष को बिना किसी अलंकरण के चित्रित किया। उनकी कहानियाँ जीवन के कठोर यथार्थ को उजागर करती हैं, जिससे पाठक भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। प्रेमचंद का यथार्थ समाज को आत्मचिंतन करने और सुधार की दिशा में प्रेरित करता है। यही कारण है कि प्रेमचंद आज भी यथार्थवादी साहित्य के पुरोधा माने जाते हैं।

प्रश्न 6: प्रेमचंद के साहित्य में किसान जीवन का चित्रण कैसे हुआ है?

उत्तर: प्रेमचंद ने किसान जीवन को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित किया है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में किसानों की आर्थिक तंगी, शोषण और संघर्ष को यथार्थ रूप में दिखाया गया है। 'गोदान' प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास है जिसमें किसान होरी के जीवन के माध्यम से ग्रामीण भारत की पीड़ा दिखाई गई है। प्रेमचंद ने किसानों को सिर्फ पात्र नहीं, बल्कि समाज की आत्मा के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे पाठक उनके संघर्ष को महसूस कर पाते हैं।

प्रश्न 7: 'ईदगाह' कहानी में प्रेमचंद ने हामिद के चरित्र के माध्यम से क्या संदेश दिया?

उत्तर: 'ईदगाह' में प्रेमचंद ने बालक हामिद के माध्यम से त्याग, संवेदनशीलता और सच्चे प्रेम का संदेश दिया है। हामिद अपनी इच्छाओं को दबाकर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है, जो उसके बलिदान और समझदारी को दर्शाता है। प्रेमचंद ने यह दिखाया कि सच्चा प्रेम स्वार्थ रहित होता है। हामिद का चरित्र पाठकों के मन में गहरी छाप छोड़ता है और प्रेमचंद की मानवीय संवेदनाओं की उत्कृष्ट प्रस्तुति है।

प्रश्न 8: प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: 'गोदान' प्रेमचंद का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, जो भारतीय ग्रामीण समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। इसमें होरी नामक किसान की कहानी है, जो जीवनभर गाय खरीदने का सपना लिए संघर्ष करता है। यह उपन्यास किसानों की दयनीय स्थिति, समाज की वर्गभेद और शोषण को उजागर करता है। प्रेमचंद ने इसके माध्यम से भारतीय समाज को जागरूक किया और पाठकों को सोचने पर मजबूर किया। यह आज भी समाज सुधार के लिए प्रेरणा है।

प्रश्न 9: प्रेमचंद की कहानियों में धर्म और नैतिकता का क्या संबंध है?

उत्तर: प्रेमचंद की कहानियाँ धर्म और नैतिकता के बीच संतुलन बनाकर चलती हैं। वे धर्म को आडंबर से अलग कर मानवीय मूल्यों से जोड़ते हैं। 'पंच परमेश्वर' कहानी में प्रेमचंद ने दिखाया कि सच्चा न्याय धर्म से ऊपर होता है। उन्होंने दिखाया कि धर्म का सार मानवता, करुणा और सच्चाई में है। प्रेमचंद का साहित्य पाठकों को सच्चे नैतिक मूल्यों की ओर प्रेरित करता है, जो उनकी कहानियों की विशेषता है।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रश्न 10: प्रेमचंद ने सामाजिक विषमताओं को किस रूप में प्रस्तुत किया?

उत्तर: प्रेमचंद ने सामाजिक विषमताओं को अपने साहित्य में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने जातिवाद, वर्गभेद, स्त्री-पुरुष असमानता, शोषण और गरीबी जैसी समस्याओं पर गहराई से प्रकाश डाला। उनकी कहानियाँ जैसे 'सद्गति' और 'कफन' में सामाजिक अन्याय को उजागर किया गया है। प्रेमचंद ने केवल समस्याओं का चित्रण नहीं किया, बल्कि उनके समाधान की दिशा में सोचने के लिए पाठकों को प्रेरित किया। यही उन्हें युगप्रवर्तक बनाता है।

प्रश्न 11: प्रेमचंद के साहित्य में शोषण की समस्या को कैसे दर्शाया गया है?

उत्तर: प्रेमचंद के साहित्य में शोषण की समस्या का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उन्होंने जमींदारों, साहूकारों और सामंती व्यवस्था द्वारा गरीबों पर किए जा रहे अत्याचारों को उजागर किया। 'गोदान', 'सद्गति' और 'पूस की रात' जैसी रचनाओं में प्रेमचंद ने यह दिखाया कि कैसे मेहनतकश जनता अपने हक से वंचित रह जाती है। प्रेमचंद ने शोषण के खिलाफ लेखनी को हथियार बनाया और समाज को जागरूक करने का प्रयास किया।

प्रश्न 12: प्रेमचंद की रचनाओं में करुणा का क्या महत्व है?

उत्तर: प्रेमचंद की रचनाओं में करुणा एक केंद्रीय तत्व है। उन्होंने पात्रों की पीड़ा और संघर्ष को इतनी संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया कि पाठक स्वाभाविक रूप से उनके साथ सहानुभूति महसूस करते हैं। चाहे वह 'कफन' के पात्र हों या 'ईदगाह' का हामिद, सभी पात्र करुणा की मिसाल हैं। प्रेमचंद ने मानवीय भावनाओं को इतनी सुंदरता से उकेरा कि उनका साहित्य समाज में सहानुभूति और संवेदना को जगाने में सक्षम बन पाया।

प्रश्न 13: 'पूस की रात' कहानी में प्रेमचंद ने किसानों की स्थिति को कैसे चित्रित किया है?

उत्तर: 'पूस की रात' में प्रेमचंद ने किसान हल्कू के माध्यम से ग्रामीण भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को चित्रित किया है। हल्कू को ठंड में रात बितानी पड़ती है क्योंकि वह कम्बल खरीदने में असमर्थ है। यह कहानी किसानों की गरीबी, बेबसी और शोषण की मार्मिक झलक देती है। प्रेमचंद ने इस छोटी सी कहानी में किसानों की कठिनाइयों को इतनी गहराई से उकेरा कि वह आज भी प्रासंगिक लगती है।

प्रश्न 14: प्रेमचंद के पात्रों की विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: प्रेमचंद के पात्र आम जीवन से जुड़े होते हैं - किसान, मजदूर, स्त्री, बच्चा, बूढ़ा। वे काल्पनिक नहीं, बल्कि समाज के यथार्थ से उपजे होते हैं। उनके पात्रों में मानवीय भावनाएं, संघर्ष, करुणा और आत्मबल दिखाई देता है। चाहे वह होरी हो, हामिद हो या जोखन, प्रेमचंद के पात्र पाठकों के मन में जीवंत हो उठते हैं। प्रेमचंद ने पात्रों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को सशक्त रूप से दर्शाया।

प्रश्न 15: प्रेमचंद ने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम कैसे बनाया?

उत्तर: प्रेमचंद ने अपने साहित्य को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज सुधार का माध्यम बनाया। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में जात-पात, गरीबी, शोषण, नारी उत्पीड़न जैसे मुद्दों को उठाया। प्रेमचंद का उद्देश्य था लोगों को सामाजिक कुरीतियों से अवगत कराना और उन्हें सुधार की दिशा में प्रेरित

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

करना। उनके साहित्य ने जनमानस को प्रभावित किया और उन्हें सोचने पर विवश किया, यही प्रेमचंद की लेखनी की शक्ति है।

प्रश्न 16: प्रेमचंद की बाल मनोविज्ञान पर पकड़ कैसी थी?

उत्तर: प्रेमचंद को बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ थी। उन्होंने बच्चों की भावनाओं, इच्छाओं और सोच को सहजता से चित्रित किया। 'ईदगाह' कहानी इसका सशक्त उदाहरण है, जहाँ हामिद अपनी दादी के लिए खिलौने के बजाय चिमटा खरीदता है। प्रेमचंद ने दिखाया कि बच्चों में भी परिपक्वता और संवेदनशीलता होती है। उनका बाल चित्रण यथार्थवादी और प्रेरणादायक होता है, जो प्रेमचंद की साहित्यिक सूझबूझ का प्रमाण है।

प्रश्न 17: प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण कैसे हुआ है?

उत्तर: प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का गहरा चित्रण मिलता है। उन्होंने समाज की सच्चाई को बिना किसी लाग-लपेट के प्रस्तुत किया। 'सेवासदन', 'निर्मला', 'गोदान' जैसे उपन्यासों में समाज की विभिन्न समस्याएं जैसे दहेज, नारी शोषण, किसानों की दुर्दशा आदि को यथार्थ रूप में दिखाया गया है। प्रेमचंद का साहित्य पाठकों को समाज का आईना दिखाता है और उन्हें चिंतन करने को प्रेरित करता है।

प्रश्न 18: प्रेमचंद का नारी पात्रों के प्रति दृष्टिकोण क्या था?

उत्तर: प्रेमचंद का नारी पात्रों के प्रति दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण और सशक्तिकरण पर आधारित था। उन्होंने स्त्रियों को अबला नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मनिर्भर रूप में प्रस्तुत किया। 'सेवासदन' की सुधा, 'निर्मला' की नायिका उनके नारी पात्रों के उदाहरण हैं। प्रेमचंद ने समाज में महिलाओं की स्थिति पर प्रश्न उठाए और उन्हें सम्मान तथा अधिकार दिलाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। उनका साहित्य नारी सशक्तिकरण की दिशा में प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

प्रश्न 19: प्रेमचंद के साहित्य में जातिवाद की आलोचना कैसे हुई है?

उत्तर: प्रेमचंद ने जातिवाद की आलोचना अपने कई लेखों और कहानियों के माध्यम से की है। उन्होंने दिखाया कि जात-पात समाज को विभाजित करता है और मानवता को चोट पहुँचाता है। 'सद्रति' जैसी कहानियों में उन्होंने निम्न जातियों की दुर्दशा और सामाजिक असमानता को उजागर किया। प्रेमचंद ने यह संदेश दिया कि मनुष्य का मूल्य उसके कर्मों से होता है, न कि उसकी जाति से। उनका साहित्य समता और मानवता की वकालत करता है।

प्रश्न 20: प्रेमचंद की लोकप्रियता का मुख्य कारण क्या है?

उत्तर: प्रेमचंद की लोकप्रियता का मुख्य कारण उनकी लेखनी का यथार्थवाद, सामाजिक सरोकार और मानवीय भावनाओं की सजीव प्रस्तुति है। उन्होंने जटिल विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे पाठक सीधे जुड़ते हैं। उनके पात्र आम लोगों के प्रतिनिधि हैं, जो प्रेमचंद की कहानियों को जीवंत बनाते हैं। प्रेमचंद का साहित्य हर वर्ग को सोचने, समझने और बदलने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि वे आज भी सबसे अधिक पढ़े जाने वाले लेखक हैं।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रश्न 21: प्रेमचंद की कहानियों में ग्रामीण जीवन का चित्रण कैसे मिलता है?

उत्तर: प्रेमचंद की कहानियाँ ग्रामीण जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने किसानों की गरीबी, संघर्ष, शोषण और सामाजिक समस्याओं को यथार्थ रूप में दिखाया। 'पंच परमेश्वर', 'पूस की रात' और 'गोदान' जैसे कथानक प्रेमचंद की ग्रामीण संवेदना को उजागर करते हैं। प्रेमचंद ने गाँवों की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को साहित्य में जीवंत बना दिया, जिससे उनके पात्र और परिस्थितियाँ पाठकों को वास्तविक लगती हैं।

प्रश्न 22: प्रेमचंद की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: प्रेमचंद की भाषा-शैली सहज, सरल और प्रभावशाली है। उन्होंने खड़ी बोली हिंदी और उर्दू दोनों का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया। उनकी भाषा में स्थानीयता, मुहावरे, और कहावतों का प्रयोग होता है, जिससे पात्रों की बोली स्वाभाविक लगती है। प्रेमचंद ने विद्वता भरी भाषा के बजाय जनसाधारण की भाषा को अपनाया, जिससे वे जन-जन तक पहुँच सके। यही उनकी लोकप्रियता और प्रभाव का सबसे बड़ा कारण है।

प्रश्न 23: प्रेमचंद की कहानियों में नैतिक शिक्षा कैसे मिलती है?

उत्तर: प्रेमचंद की कहानियाँ केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं हैं, वे गहन नैतिक शिक्षा भी देती हैं। 'ईदगाह' में त्याग, 'पंच परमेश्वर' में न्याय, 'कफन' में सामाजिक विडंबना का चित्रण होता है। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से सच्चाई, करुणा, समर्पण और कर्तव्य जैसे मूल्यों को सरल ढंग से प्रस्तुत किया। प्रेमचंद के साहित्य का उद्देश्य पाठकों को नैतिक रूप से जागरूक करना और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराना था।

प्रश्न 24: प्रेमचंद ने समाज के किस वर्ग पर सबसे अधिक ध्यान दिया?

उत्तर: प्रेमचंद ने अपने साहित्य में समाज के उपेक्षित, गरीब और शोषित वर्ग पर सबसे अधिक ध्यान दिया। उन्होंने किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों और बच्चों के जीवन की समस्याओं को उभारा। प्रेमचंद का मानना था कि साहित्य को समाज के दबे-कुचले वर्ग की आवाज़ बनना चाहिए। उनके पात्र आम जीवन से जुड़े होते हैं, जो समाज के यथार्थ को दर्शाते हैं। प्रेमचंद का साहित्य वंचितों के लिए एक प्रेरणा बना।

प्रश्न 25: प्रेमचंद के साहित्य में 'न्याय' की अवधारणा कैसे व्यक्त हुई है?

उत्तर: प्रेमचंद के साहित्य में 'न्याय' एक महत्वपूर्ण तत्व है। उन्होंने दिखाया कि सच्चा न्याय वही है जो निष्पक्ष और मानवीय दृष्टिकोण से हो। 'पंच परमेश्वर' में न्याय की भावना का सशक्त चित्रण है, जहाँ दोस्ती के बावजूद सच्चाई के पक्ष में निर्णय दिया जाता है। प्रेमचंद ने दिखाया कि समाज में नैतिक और आत्मिक न्याय का महत्व अधिक है, और यही न्याय सामाजिक परिवर्तन की नींव है।

प्रश्न 26: प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक क्यों हैं?

उत्तर: प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि उन्होंने जिन समस्याओं को उठाया, वे आज भी समाज में मौजूद हैं। किसानों की पीड़ा, नारी शोषण, जातिवाद, गरीबी और सामाजिक विषमता जैसे विषय आज भी चर्चा में हैं। प्रेमचंद ने जो सवाल उठाए, वे आज भी उत्तर माँगते हैं। उनकी यथार्थवादी दृष्टि और मानवीय संवेदना उन्हें कालजयी बनाती है। इसलिए प्रेमचंद का साहित्य हर युग के लिए मार्गदर्शक है।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रश्न 27: प्रेमचंद की दृष्टि में सच्चा धर्म क्या है?

उत्तर: प्रेमचंद की दृष्टि में सच्चा धर्म मानव सेवा, करुणा और सच्चाई है। उन्होंने धर्म के नाम पर हो रहे पाखंड और ढकोसले की आलोचना की। 'सद्गति' जैसी कहानियों में उन्होंने दिखाया कि कैसे धर्म का उपयोग शोषण के लिए होता है। प्रेमचंद मानते थे कि धर्म वह है जो समाज में समानता, भाईचारा और नैतिकता को बढ़ावा दे। उनका साहित्य सच्चे धर्म की व्याख्या करता है और सोचने पर मजबूर करता है।

प्रश्न 28: प्रेमचंद की रचनाओं में बालक पात्रों का चित्रण कैसे हुआ है?

उत्तर: प्रेमचंद ने बालक पात्रों को बहुत संवेदनशीलता से चित्रित किया है। 'ईदगाह' का हामिद इसका श्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ उसकी सोच, त्याग और परिपक्वता दिल छू जाती है। प्रेमचंद बच्चों की मासूमियत के साथ-साथ उनकी समझदारी और भावना को बारीकी से प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने दिखाया कि बच्चे भी परिस्थितियों को समझते हैं और निर्णय ले सकते हैं। प्रेमचंद की बाल-पात्र रचनाओं में पाठकों से सीधा जुड़ाव बनाते हैं।

प्रश्न 29: प्रेमचंद के साहित्य में आर्थिक विषमता का चित्रण कैसे हुआ है?

उत्तर: प्रेमचंद ने आर्थिक विषमता को गहराई से उकेरा है। उनके पात्रों में अमीर और गरीब के बीच की खाई स्पष्ट दिखती है। 'गोदान' में होरी का संघर्ष और साहूकारों का शोषण इस विषमता का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने दिखाया कि कैसे गरीब वर्ग मेहनत करता है लेकिन फिर भी वंचित रहता है। प्रेमचंद का साहित्य समाज की असमानता को उजागर करता है और न्यायपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकता को सामने लाता है।

प्रश्न 30: प्रेमचंद की कहानियों में हास्य और व्यंग्य का प्रयोग कैसे मिलता है?

उत्तर: प्रेमचंद की कहानियों में हास्य और व्यंग्य का प्रयोग सामाजिक कटाक्ष के रूप में मिलता है। उन्होंने हल्के-फुल्के संवादों और स्थितियों के माध्यम से समाज की विडंबनाओं को उजागर किया। 'नमक का दरोगा' जैसी कहानियाँ भ्रष्टाचार और पाखंड पर व्यंग्य करती हैं। प्रेमचंद का हास्य चुटीला नहीं बल्कि गहराई से सोचने पर विवश करता है। उनका व्यंग्य समाज की कमियों को उजागर करता है, जिससे पाठकों को सीख मिलती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: बड़े होने का क्या मतलब है?

उत्तर: बड़े होने का मतलब केवल उम्र बढ़ना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और अनुशासन सीखना भी है। बड़े बच्चों को घर में छोटे बच्चों के लिए आदर्श बनना होता है और उनकी देखभाल करनी होती है।

प्रश्न 2: बड़े भाई साहब की पढ़ाई का तरीका कैसा था?

उत्तर: बड़े भाई साहब पढ़ाई में बहुत मेहनती और धैर्यवान थे। वे जल्दी में काम नहीं करते थे और एक साल का काम कई सालों में पूरा करते थे ताकि आधार मजबूत रहे।

प्रश्न 3: लेखक को बड़े भाई साहब का कौन-सा रूप डराता था?

उत्तर: लेखक को बड़े भाई साहब का रौद्र रूप डराता था, खासकर जब वे पूछते थे कि 'कहाँ थे?' उनके कठोर सवाल से लेखक डर जाता था।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रश्न 4: लेखक को खेल-कूद और पढ़ाई में क्या समस्या थी?

उत्तर: लेखक को पढ़ाई में मन नहीं लगता था, वह खेल-कूद पसंद करता था। पढ़ाई और टाइम-टेबल का पालन करना उसके लिए मुश्किल था।

प्रश्न 5: बड़े भाई साहब का पढ़ाई के प्रति दृष्टिकोण क्या था?

उत्तर: बड़े भाई साहब पढ़ाई को बहुत गंभीरता से लेते थे। वे कहते थे कि अंग्रेजी पढ़ना आसान नहीं, इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

प्रश्न 6: लेखक बड़े भाई साहब के लिए क्यों आदर्श था?

उत्तर: लेखक बड़े भाई साहब के लिए आदर्श इसलिए था क्योंकि वह चाहते थे कि छोटा भाई उनकी मेहनत और अनुशासन का उदाहरण बने।

प्रश्न 7: बड़े भाई साहब ने लेखक को क्या सीख दी?

उत्तर: उन्होंने लेखक को पढ़ाई में मेहनत करने, अनुशासन बनाए रखने और घमंड न करने की सीख दी। उन्होंने रावण के उदाहरण से यह समझाया।

प्रश्न 8: लेखक को अपनी पढ़ाई में क्या बदलाव लाना पड़ा?

उत्तर: लेखक ने मेहनत बढ़ाई, टाइम-टेबल बनाया, लेकिन मैदान की हरियाली और खेल उसे बार-बार भटकाते थे।

प्रश्न 9: बड़े भाई साहब का स्वभाव कैसा था?

उत्तर: बड़े भाई साहब स्वभाव से अध्ययनशील, गंभीर और अनुशासित थे। वे किताबों में अक्सर लगे रहते थे और पढ़ाई को प्राथमिकता देते थे।

प्रश्न 10: लेखक को बड़े भाई साहब की उपेक्षा क्यों महसूस होती थी?

उत्तर: लेखक को लगता था कि बड़े भाई साहब उसकी मेहनत को नहीं देखते और खेल-कूद में अधिक व्यस्त रहने के लिए उसे डांटते हैं।

प्रश्न 11: बड़े भाई साहब ने अंग्रेजी पढ़ाई को लेकर क्या कहा?

उत्तर: उन्होंने कहा कि अंग्रेजी पढ़ना आसान नहीं है, इसमें कड़ी मेहनत और समय देना पड़ता है। बिना मेहनत के कोई अंग्रेजी विद्वान नहीं बन सकता।

प्रश्न 12: लेखक के लिए बड़े भाई साहब की नसीहत का क्या महत्व था?

उत्तर: बड़े भाई साहब की नसीहत से लेखक को प्रेरणा मिलती थी, वे उसे अनुशासित करते और उसकी कमजोरियों को सुधारने की कोशिश करते थे।

प्रश्न 13: लेखक को बड़े भाई साहब से डर क्यों लगता था?

उत्तर: बड़े भाई साहब का कड़क स्वभाव और कठोर सवाल लेखक को डराते थे, जिससे वह अपने गलत काम स्वीकार कर लेता था।

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

प्रश्न 14: लेखक ने पढ़ाई के लिए क्या योजना बनाई थी?

उत्तर: लेखक ने टाइम-टेबल बनाया जिसमें सुबह से लेकर रात तक पढ़ाई के अलग-अलग विषयों के लिए समय निर्धारित किया था।

प्रश्न 15: टाइम-टेबल का पालन करना लेखक के लिए क्यों मुश्किल था?

उत्तर: मैदान की हरियाली, खेल-कूद की ओर आकर्षण और दोस्तों के साथ खेलने की इच्छा के कारण वह पढ़ाई से भटक जाता था।

प्रश्न 16: लेखक ने बड़े भाई साहब की तुलना किससे की?

उत्तर: लेखक ने बड़े भाई साहब की तुलना रावण से की, जो घमंड के कारण नष्ट हुआ, और कहा कि घमंड नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 17: बड़े भाई साहब ने लेखक को क्या चेतावनी दी?

उत्तर: उन्होंने चेतावनी दी कि घमंड और आलस्य से बुद्धि का विकास नहीं होता, पढ़ाई का उद्देश्य केवल परीक्षा पास होना नहीं, समझना है।

प्रश्न 18: लेखक की परीक्षा का परिणाम क्या था?

उत्तर: लेखक पास हो गया और प्रथम आया, जबकि बड़े भाई साहब फेल हो गए। इससे लेखक को आत्मसम्मान बढ़ा।

प्रश्न 19: बड़े भाई साहब के नाकाम होने पर लेखक का क्या अनुभव था?

उत्तर: लेखक को उनके दुख का एहसास हुआ, उसने उनसे दया और समझदारी से पेश आने का निर्णय लिया।

प्रश्न 20: बड़े भाई साहब की मेहनत और लगन से लेखक को क्या सीख मिली?

उत्तर: मेहनत और लगन से सफलता मिलती है। बड़े भाई साहब की पढ़ाई की गंभीरता ने लेखक को अनुशासन और परिश्रम का महत्व समझाया।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

प्रश्न 1: बड़े होने का क्या मतलब है?

- a) उम्र बढ़ना
- b) जिम्मेदारी लेना
- c) केवल पढ़ाई करना
- d) खेलना

उत्तर: b) जिम्मेदारी लेना

प्रश्न 2: बड़े भाई साहब पढ़ाई में कैसे थे?

- a) आलसी

- b) मेहनती
- c) तेज तर्रार
- d) कम ध्यान देने वाले

उत्तर: **b)** मेहनती

प्रश्न 3: लेखक को बड़े भाई साहब का कौन-सा रूप डराता था?

- a) हंसमुख
- b) रौद्र
- c) चंचल
- d) शांत

उत्तर: **b)** रौद्र

प्रश्न 4: लेखक को किस काम में अधिक रुचि थी?

- a) पढ़ाई
- b) खेल-कूद
- c) संगीत
- d) चित्रकला

उत्तर: **b)** खेल-कूद

प्रश्न 5: बड़े भाई साहब ने अंग्रेजी पढ़ाई के बारे में क्या कहा?

- a) आसान है
- b) बहुत कठिन है
- c) मेहनत से आसान होती है
- d) फालतू विषय है

उत्तर: **c)** मेहनत से आसान होती है

प्रश्न 6: लेखक ने पढ़ाई के लिए क्या बनाया?

- a) खेल का मैदान
- b) टाइम-टेबल
- c) नोटबुक
- d) नई किताब

उत्तर: **b)** टाइम-टेबल

प्रश्न 7: बड़े भाई साहब का स्वभाव कैसा था?

- a) गंभीर और अनुशासित
- b) मजाकिया

c) उदासीन

d) शर्मिला

उत्तर: **a)** गंभीर और अनुशासित

प्रश्न 8: लेखक को पढ़ाई में क्या मुश्किल होती थी?

a) किताबें मिलना

b) टाइम-टेबल का पालन

c) विषय समझना

d) परीक्षा देना

उत्तर: **b)** टाइम-टेबल का पालन

प्रश्न 9: लेखक ने बड़े भाई साहब की तुलना किससे की?

a) रावण

b) राम

c) कृष्ण

d) अर्जुन

उत्तर: **a)** रावण

प्रश्न 10: बड़े भाई साहब ने लेखक को क्या नसीहत दी?

a) पढ़ाई छोड़ दो

b) घमंड मत करो

c) खेल में आगे बढ़ो

d) आलस करो

उत्तर: **b)** घमंड मत करो

प्रश्न 11: लेखक की परीक्षा का परिणाम क्या था?

a) फेल

b) पास और प्रथम

c) दूसरा स्थान

d) परीक्षा नहीं दी

उत्तर: **b)** पास और प्रथम

प्रश्न 12: लेखक को बड़े भाई साहब से क्या महसूस होता था?

a) प्यार

b) उपेक्षा

c) सम्मान

d) डर

उत्तर: **d)** डर

प्रश्न 13: बड़े भाई साहब अंग्रेजी पढ़ाई में क्यों सफल नहीं हुए?

a) मेहनत नहीं की

b) आलसी थे

c) समय पर तैयारी नहीं की

d) लेखक से जलते थे

उत्तर: **c)** समय पर तैयारी नहीं की

प्रश्न 14: लेखक के लिए बड़े भाई साहब का क्या मतलब था?

a) विरोधी

b) आदर्श

c) दोस्त

d) शिक्षक

उत्तर: **b)** आदर्श

प्रश्न 15: बड़े भाई साहब ने किस चीज़ पर ज्यादा जोर दिया?

a) खेल-कूद

b) संगीत

c) पढ़ाई और अनुशासन

d) भोजन

उत्तर: **c)** पढ़ाई और अनुशासन

प्रश्न 16: लेखक को पढ़ाई में किस चीज़ ने भटकाया?

a) कित्ताबें

b) खेल और मैदान

c) शिक्षक

d) माता-पिता

उत्तर: **b)** खेल और मैदान

प्रश्न 17: बड़े भाई साहब ने लेखक को किस प्रकार पढ़ाई करने को कहा?

a) आलस से

b) पूरी मेहनत से

- c) केवल रात को
- d) बिना ध्यान दिए

उत्तर: **b)** पूरी मेहनत से

प्रश्न 18: लेखक ने परीक्षा में क्या किया?

- a) फेल हो गया
- b) प्रथम आया
- c) बीच में छोड़ दिया
- d) दूसरा आया

उत्तर: **b)** प्रथम आया

प्रश्न 19: बड़े भाई साहब का मुख्य लक्ष्य क्या था?

- a) खेलना
- b) पढ़ाई में सफल होना
- c) दोस्तों के साथ घूमना
- d) संगीत सीखना

उत्तर: **b)** पढ़ाई में सफल होना

प्रश्न 20: लेखक ने बड़े भाई साहब से क्या सीखा?

- a) खेलना
- b) मेहनत और अनुशासन
- c) आलस करना
- d) किताबें छोड़ना

उत्तर: **b)** मेहनत और अनुशासन

'बड़े भाई साहब' पाठ पर आधारित प्रश्न True or False (सही या गलत)

- बड़े भाई साहब बहुत मेहनती और अनुशासित थे।
उत्तर: सही
- लेखक को बड़े भाई साहब का स्वभाव बिल्कुल भी डरावना नहीं लगता था।
उत्तर: गलत
- बड़े भाई साहब पढ़ाई में हमेशा सफल रहते थे।
उत्तर: गलत

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

- लेखक को खेल-कूद में अधिक रुचि थी।
उत्तर: सही
- बड़े भाई साहब ने लेखक को पढ़ाई छोड़ने को कहा।
उत्तर: गलत
- लेखक ने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
उत्तर: सही
- बड़े भाई साहब ने अंग्रेज़ी पढ़ाई में सफलता नहीं पाई।
उत्तर: सही
- बड़े भाई साहब ने लेखक को आलसी बनने की सलाह दी।
उत्तर: गलत
- लेखक और बड़े भाई साहब के बीच प्यार भरा संबंध था।
उत्तर: गलत
- बड़े भाई साहब ने लेखक को मेहनत और अनुशासन की शिक्षा दी।
उत्तर: सही
- लेखक ने पढ़ाई के लिए टाइम-टेबल बनाया था।
उत्तर: सही
- बड़े भाई साहब को पढ़ाई से कोई दिलचस्पी नहीं थी।
उत्तर: गलत
- लेखक को बड़े भाई साहब का रूप कभी रौद्र नहीं लगा।
उत्तर: गलत
- बड़े भाई साहब ने लेखक को घमंड न करने की नसीहत दी।
उत्तर: सही
- लेखक को पढ़ाई में कोई दिक्कत नहीं आती थी।
उत्तर: गलत
- बड़े भाई साहब खेल-कूद में सबसे अच्छे खिलाड़ी थे।
उत्तर: गलत
- लेखक ने बड़े भाई साहब की सलाह मानकर अपनी पढ़ाई सुधार ली।
उत्तर: सही

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

- बड़े भाई साहब का स्वभाव गंभीर और अनुशासित था।
उत्तर: सही
- लेखक और बड़े भाई साहब दोनों पढ़ाई में अच्छे थे।
उत्तर: गलत
- बड़े भाई साहब ने कभी लेखक की मदद नहीं की।
उत्तर: गलत

रिक्त स्थान भरिए – प्रेमचंद (बड़े भाई साहब) पर आधारित

- बड़े भाई साहब का स्वभाव बहुत _____ था।
उत्तर: कठोर
- लेखक को बड़े भाई साहब का रूप कभी _____ नहीं लगता था।
उत्तर: डरावना
- बड़े भाई साहब लेखक की पढ़ाई में हमेशा _____ करते थे।
उत्तर: सहायता
- लेखक खेल-कूद में _____ था।
उत्तर: रुचि
- बड़े भाई साहब ने लेखक को _____ और अनुशासन का पाठ पढ़ाया।
उत्तर: मेहनत
- लेखक ने बड़े भाई साहब की सलाह मानकर अपनी पढ़ाई में _____ पाया।
उत्तर: सुधार
- बड़े भाई साहब हमेशा _____ रहते थे।
उत्तर: गंभीर
- बड़े भाई साहब की सबसे अच्छी विशेषता थी उनका _____।
उत्तर: अनुशासन
- लेखक के बड़े भाई साहब ने उसे _____ बनाने की प्रेरणा दी।
उत्तर: परिश्रमी
- लेखक को बड़े भाई साहब के कठोर स्वभाव से कभी _____ नहीं हुआ।
उत्तर: डर

Ncert Solutions of पाठ 8 Premchand (बड़े भाई साहब)

- बड़े भाई साहब ने अंग्रेजी पढ़ाई में _____ हासिल की।
उत्तर: सफलता
- लेखक बड़े भाई साहब को बहुत _____ करता था।
उत्तर: आदर
- बड़े भाई साहब ने लेखक को पढ़ाई के लिए _____ बनाया।
उत्तर: समय-सारणी
- बड़े भाई साहब ने लेखक को _____ बनने से रोका।
उत्तर: आलसी
- लेखक ने बड़े भाई साहब से बहुत कुछ _____।
उत्तर: सीखा
- बड़े भाई साहब का स्वभाव था _____ और अनुशासित।
उत्तर: कठोर
- लेखक ने अपने बड़े भाई साहब की बातों को _____ लिया।
उत्तर: गंभीरता से
- बड़े भाई साहब ने हमेशा _____ बनाए रखा।
उत्तर: अनुशासन
- लेखक ने बड़े भाई साहब की मदद से परीक्षा में _____ प्राप्त किया।
उत्तर: सफलता
- बड़े भाई साहब ने लेखक को हमेशा _____ की शिक्षा दी।
उत्तर: मेहनत